जनवाचन आंदोलन

जन वाचन आंदोलन का मकसद है। किताबों को गाँव-गाँव ले जाना, इन किताबों को नवपाठकों के बीच पढ़कर सुनाना और पढ़वाकर सुनना। गाँव की जनता के पास आज भी पढ़ने-लिखने के लिए स्तरीय किताबें नहीं हैं और जो हैं भी वे बेहद महँगी हैं। भारत ज्ञान विज्ञान समिति ग्रामीण जन तक कम कीमत और सरल भाषा में देशभर के मशहूर लेखकों की किताबें पहुँचाना चाहती है, ताकि गाँव-गाँव में जन वाचन, पढ़ाई और पुस्तकालय संस्कृति पैदा हो सके। संपूर्ण साक्षरता अभियान से जो नवपाठक निकलकर सामने आए हैं, वे अपने साक्षरता के अर्जित कौशल को बनाए रख सकें, उनके सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना का स्तर बढ़े और वे जागरुक होकर अपने बुनियादी हकों की लड़ाई के लिए लामबंद हो सकें, यह इस अभियान का प्राथमिक उद्देश्य है। भारतीय लोकतंत्र की रक्षा के लिए गाँव के लोग आगे आएँ, इसके लिए भी इस तरह की चेतना का विकास जरूरी है। साक्षरता केवल अक्षर सीखने का काम नहीं है, यह पूरी दुनिया को जानने का काम है।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य : 10 रुपये

दो गौरैयाँ

भीष्म साहनी

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

दो गौरैयाँ: भीष्म साहनी
Do Gauraiyan: Bhishma Sahni

नवपाठकों के लिए भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित
'चकमक' से साभार

पुस्तकमाला संपादक: असद ज़ैदी और विष्णु नागर
कार्यकारी संपादक: संजय कुमार
Series Editor : Asad Zaidi and Vishnu Nagar
Executive Editor : Sanjay Kumar

चित्रांकन: अक्षय चराटे और पंकज झा
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

पुनर्मुद्रण : वर्ष 2009

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे जन वाचन आंदोलन के तहत किया गया है ताकि लोगों में पढ़ने–लिखने की आदत पैदा हो सके। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के पाठकों को सस्ती और सरल भाषा में देश के मशहूर रचनाकर्मियों द्वारा लिखी गई उत्कृष्ट पुस्तकें उपलब्ध करवाना है। खासकर उन नवपाठकों के लिए जो देशभर में चलाए गए संपूर्ण साक्षरता अभियान से निकलकर सामने आए हैं।

मूल्य : 10 रुपये

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi****, Basement of Y.W.A. Hostel No. II,*
G-Block, Saket , New Delhi - 110017, Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773,
Printed at Sun Shine Offset, New Delhi - 110 018

दो गौरैयाँ
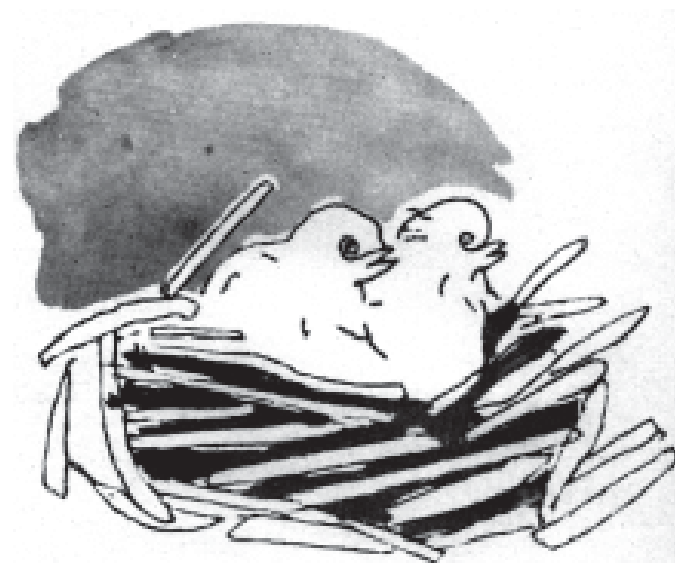
भीष्म साहनी
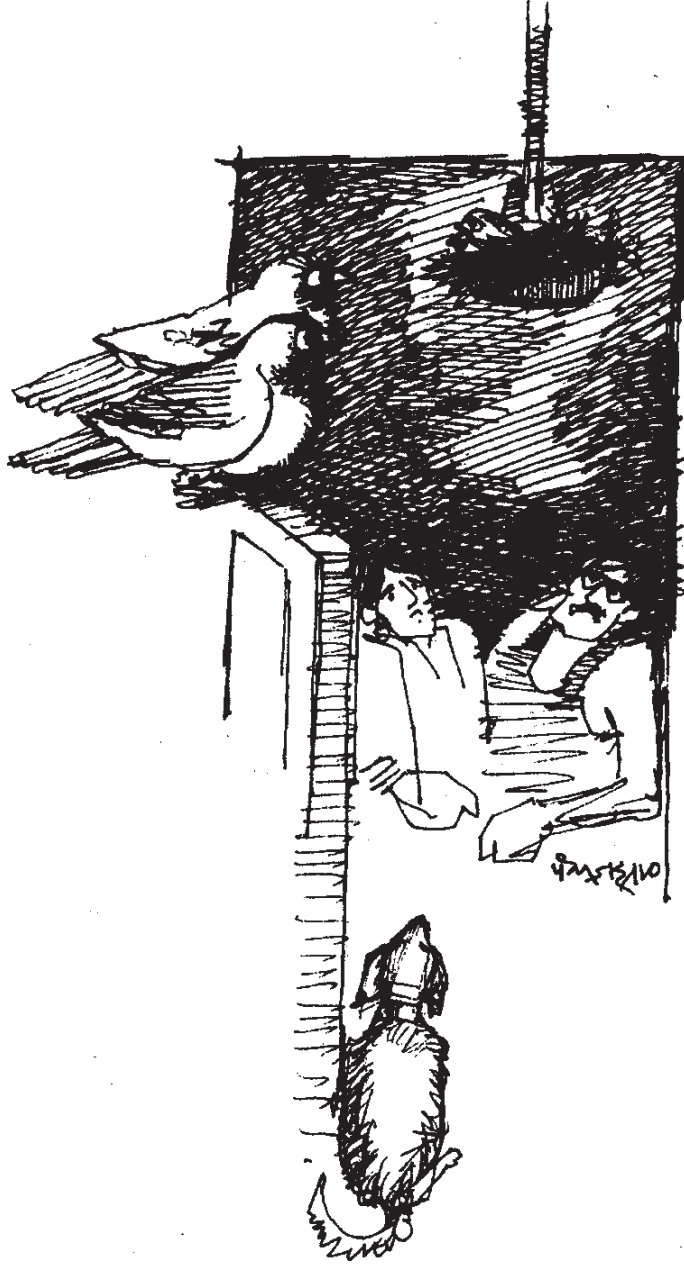
दो गौरैयाँ

घर में हम तीन ही व्यक्ति रहते हैं–माँ, पिताजी और मैं। पर पिताजी कहते हैं कि यह घर सराय बना हुआ है; हम तो जैसे यहाँ मेहमान हैं, घर के मालिक तो कोई दूसरे हैं।

आँगन में आम का पेड़ है। तरह–तरह के पक्षी उस पर डेरा डाले रहते हैं। जो भी पक्षी पहाड़ियों–घाटियों पर से उड़ता हुआ दिल्ली पहुँचता है, पिताजी कहते हैं, वही सीधा हमारे घर पहुँच जाता है, जैसे हमारे घर का पता लिखवाकर लाया हो! यहाँ कभी तोते पहुँच जाते हैं, तो कभी कौवे और कभी तरह–तरह की गौरैयाँ। वह शोर मचता है कि कानों के पर्दे फट जाएं, पर लोग कहते हैं कि पक्षी गा रहे हैं!

घर के अंदर भी यही हाल है। बीसियों तो चूहे बसते हैं। रात–भर एक कमरे से दूसरे कमरे में भागते फिरते हैं। वह धमाचौकड़ी मचती है कि हम लोग ठीक तरह से सो भी नहीं पाते। बर्तन गिरते हैं, डिब्बे खुलते हैं, प्याले टूटते हैं। एक चूहा

अंगीठी के पीछे बैठना पसंद करता है; शायद बूढ़ा है, उसे सर्दी बहुत लगती है। एक दूसरा है जिसे बाथरूम की टंकी पर चढ़कर बैठना पसंद है। उसे शायद गर्मी बहुत लगती है। बिल्ली हमारे घर में रहती तो नहीं, मगर घर उसे भी पसंद है, और वह कभी-कभी झाँक जाती है, मन आया तो अंदर आकर दूध पी गई, न मन आया तो बाहर से ही 'फिर आऊँगी' कहकर चली जाती है। शाम पड़ते ही दो-तीन चमगादड़ कमरों के आर-पार पर फैलाए कसरत करने लगते हैं। घर में कबूतर भी हैं। दिन-भर 'गुटर-गूं गुटर-गूं' का संगीत सुनाई देता रहता है। इतने पर ही बस नहीं, घर में छिपकलियाँ भी हैं और बर्रे भी हैं और चींटियों की तो जैसे फौज ही छावनी डाले हुए है।

अब एक दिन दो गौरैयाँ सीधी अंदर घुस आईं, और बिना पूछे उड़-उड़कर मकान देखने लगीं। पिताजी कहने लगे कि मकान का निरीक्षण कर रही हैं कि उनके रहने योग्य है या नहीं। कभी वे किसी रोशनदान पर जा बैंठतीं, तो कभी खिड़की पर। फिर जैसे आई थीं वैसे ही उड़ गईं। पर दो दिन बाद हमने क्या देखा कि बैठक की छत में लगे पंखे के गोले में उन्होंने अपना बिछावन बिछा लिया है, और सामान भी ले आई हैं और मजे से दोनों बैठी गाना गा रही हैं। जाहिर है, उन्हें घर पसंद आ गया था।

माँ और पिताजी दोनों सोफे पर बैठे उनकी ओर देखे जा रहे थे। थोड़ी देर बाद माँ सिर हिलाकर बोलीं, ''अब तो ये नहीं उड़ेंगी। पहले इन्हें उड़ा देते, तो उड़ जातीं। अब तो इन्होंने यहाँ घोंसला बना लिया है।''

इस पर पिताजी को गुस्सा आ गया। वह उठ खड़े हुए और बोले, ''देखता हूँ ये कैसे यहाँ रहती हैं । गौरैयाँ मेरे आगे क्या चीज़ हैं! मैं भी जात का खत्री हूँ, अभी निकाल बाहर करता हूँ। ''

''छोड़ो जी, चूहों को तो निकाल नहीं पाए, अब चिड़ियों को निकालेंगे !'' माँ ने व्यंग्य से कहा।

माँ कोई बात व्यंग्य में कहें, तो पिताजी उबल पड़ते हैं। वे समझते हैं कि माँ उनका मजाक उड़ा रही हैं। वे फौरन उठ खड़े हुए और उन्होंने पंखे के नीचे जाकर जोर से ताली बजाई और मुँह से 'श....शू' कहा, बाँहें झुलाईं, फिर खड़े-खड़े कूदने लगे, कभी बाँहें झुलाते, कभी 'श...शू' करते।

गौरैयों ने घोंसले में से सिर निकालकर नीचे की ओर झांककर देखा और दोनों एक साथ चीं-चीं करने लगीं। और माँ खिलखिलाकर हँसने लगीं।

पिताजी को गुस्सा आ गया, ''इसमें हँसने की क्या बात है?''

माँ को ऐसे मौकों पर हमेशा मज़ाक सूझता है। हँसकर बोली, ''चिड़ियाँ एक दूसरी से पूछ रही हैं कि यह आदमी कौन है और नाच क्यों रहा है?''

तब पिताजी को और भी ज़्यादा गुस्सा आ गया और वे पहले से भी ज़्यादा ऊँचा कूदने लगे।

गौरैयाँ घोंसले में से निकलकर दूसरे पंखे के डैने पर जा बैठीं। उन्हें पिताजी का नाचना जैसे बहुत पसंद आ रहा था। माँ फिर हँसने लगीं, ''ये निकलेंगी नहीं, जी। अब इन्होंने अंडे दे दिए होंगे।''

''निकलेंगी कैसे नहीं ?'' पिताजी बोले और बाहर से लाठी उठा लाए। इसी बीच गौरैयाँ फिर घोंसले में जा बैठी थीं। उन्होंने लाठी ऊँची उठाकर पंखे के गोले को ठकोरा। 'चीं-चीं' करती गौरैयाँ उड़कर पर्दे के डंडे पर जा बैठीं।

''इतनी तकलीफ करने की क्या ज़रूरत थी। पंखा चला देते, तो ये उड़ जातीं।'' माँ ने हँसकर कहा।

पिताजी लाठी उठाए पर्दे के डंडे की ओर लपके। एक गौरैया उड़कर किचन के दरवाज़े पर।

माँ फिर हँस दीं, ''तुम तो बड़े समझदार हो जी, सभी दरवाज़े खुले हैं और तुम गौरैयों को बाहर निकाल रहे हो। एक दरवाज़ा खुला छोड़ो, बाकी दरवाज़े बंद कर दो। तभी ये निकलेंगी।''

अब पिताजी ने मुझे झिड़ककर कहा, ''तू खड़ा क्या देख रहा है? जा, दोनों दरवाज़े बंद कर दे!''

मैंने भागकर दोनों दरवाज़े बंद कर दिए। केवल किचनवाला दरवाज़ा खुला रहा।

पिताजी ने फिर लाठी उठाई और गौरैयों पर हमला बोल दिया। एक बार तो झूलती लाठी माँ के सिर पर लगते-लगते बची। 'चीं-चीं' करती चिड़ियाँ कभी एक जगह तो कभी दूसरी जगह जा बैठतीं। आखिर दोनों किचन की ओर खुलनेवाले

दरवाज़े में से बाहर निकल गईं। माँ तालियाँ बजाने लगीं। पिताजी ने लाठी दीवार के साथ टिकाकर रख दी और छाती फैलाए कुर्सी पर आ बैठे।

''आज दरवाज़े बंद रखो,'' उन्होंने हुक्म दिया। ''एक दिन अंदर नहीं घुस पाएंगी, तो घर छोड़ देंगी।''

तभी पंखे के ऊपर से 'चीं-चीं' की आवाज़ सुनाई पड़ी। और मां खिलखिलाकर हँस दीं। मैंने सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा, दोनों गौरैयाँ फिर से अपने घोंसले में मौजूद थीं।

''दरवााज़े के नीचे से आ गई हैं,'' माँ बोलीं।

मैंने दरवाज़े के नीचे देखा। सचमुच दरवाज़ों के नीचे थोड़ी-थोड़ी जगह खाली थी।

पिताजी को फिर गुस्सा आ गया। माँ मदद तो करती नहीं थीं, बस, बैठी हँसे जा रही थीं।

अब तो पिताजी गौरैयों पर पिल पड़े। उन्होंने दरवाज़ों के नीचे कपड़े ठूंस दिए ताकि कहीं कोई छेद बचा नहीं रह जाए। और फिर लाठी झुलाते हुए उन पर टूट पड़े। चिड़ियाँ 'चीं-चीं' करतीं फिर बाहर निकल गईं, पर थोड़ी ही देर बाद वे फिर कमरे में मौजूद थीं। अबकी बार वे रोशनदान में से आ गई थीं जिसका एक शीशा टूटा हुआ था।

''देखो-जी, चिड़ियों को मत निकालो,'' माँ ने अबकी बार गंभीरता से कहा, ''अब तो इन्होंने अंडे भी दे दिए होंगे। अब ये यहां से नहीं जाएँगी।''

''क्या मतलब? मैं कालीन बरबाद करवा लूँ?''

पिताजी बोले। और उन्होंने कुर्सी पर चढ़कर रोशनदान में कपड़ा ठूँस दिया, और फिर लाठी झुलाकर एक बार फिर चिड़ियों को खदेड़ दिया। दोनों पिछले आँगन की दीवार पर जा बैठीं।

इतने में रात पड़ गई। हम खाना खाकर ऊपर जाकर सो गए। जाने से पहले मैंने आँगन में झाँककर देखा, चिड़ियाँ वहाँ नहीं थीं। मैंने समझ लिया कि उन्हें अक्ल आ गई होगी। अपनी हार मानकर किसी दूसरी जगह चली गई होंगी।

दूसरे दिन इतवार था। जब हम लोग नीचे उतरकर आए, तो वे फिर से मौज़ूद थीं और मज़े से बैठी मल्हार गा रही थीं। पिताजी ने फिर लाठी उठा ली। उस दिन उन्हें गौरैयों को बाहर निकालने में बहुत देर नहीं लगी।

अब तो रोज यही कुछ होने लगा। दिन में तो वे बाहर निकाल दी जातीं, पर रात के वक्त जब हम सो रहे होते, तो न जाने किस रास्ते से वे अंदर घुस आतीं।

पिताजी परेशान हो उठे। आखिर कोई कहां तक लाठी झुला सकता है ? पिताजी बार–बार कहें, ''मैं हार माननेवाला आदमी नहीं हूँ। मैं जात का खत्री हूँ।'' पर आखिर वह भी तंग आ गए थे। आखिर जब उनकी सहनशीलता चुक गई, तो कहने लगे कि वे गौरैयों का घोंसला नोचकर निकाल देंगे। और वे फौरन ही बाहर से एक स्टूल उठा लाए।

घोंसला तोड़ना कठिन काम नहीं था। उन्होंने पंखे के नीचे फर्श पर स्टूल रखा, और लाठी लेकर स्टूल पर चढ़ गए। ''किसी को सचमुच बाहर निकालना हो, तो उसका घर तोड़

देना चाहिए,'' उन्होंने गुस्से से कहा।

घोंसले में से अनेक तिनके बाहर की ओर लटक रहे थे, गौरैयों ने सजावट के लिए मानो झालर टाँग रखी हो। पिताजी ने लाठी का सिरा सूखी घास के तिनके पर जमाया और दाईं ओर खींचा। दो तिनके घोंसले में से अलग हो गए और फरफराते हुए नीचे उतरने लगे।

''चलो, दो तिनके तो निकल गए!'' माँ हँसकर बोलीं, ''अब बाकी दो हज़ार भी निकल जाएँगे!''

तभी मैंने बाहर आँगन की ओर देखा और मुझे दोनों गौरैयाँ नज़र आईं। दोनों चुपचाप दीवार पर बैठी थीं। इस बीच दोनों कुछ–कुछ दुबला गई थीं, कुछ–कुछ काली पड़ गई थीं। अब वे चहक भी नहीं रही थीं।

अब पिताजी लाठी का सिरा घास के तिनके के ऊपर रखकर वहीं रखे-रखे घुमाने लगे। इससे घोंसले के लंबे-लंबे तिनके लाठी के सिरे के साथ लिपटने लगे। वे लिपटते गए, लिपटते गए, और घोंसला लाठी के इर्द-गिर्द खिंचता चला आने लगा। फिर वह खिंच-खिंचकर लाठी के सिरे के इर्द-गिर्द लपेटा जाने लगा। सूखी घास और रूई के फाहे, और धागे और थिगलियाँ लाठी के सिर पर लिपटने लगीं। तभी सहसा ज़ोर की आवाज़ आई, ''चीं-चीं, चीं-चीं!!!''

पिताजी के हाथ ठिठक गए। यह क्या? क्या गौरैयाँ लौट आई हैं? मैंने झट से बाहर की ओर देखा। नहीं, दोनों गौरैयाँ बाहर दीवार पर गुमसुम बैठी थीं।

''चीं-चीं, चीं-ची!'' फिर आवाज़ आई। मैंने ऊपर देखा। पंखे के गोले के ऊपर से दो नन्ही-नन्ही गौरैयाँ सिर निकाले नीचे की ओर देख रही थीं और चीं-चीं किए जा रही थीं। अभी भी पिताजी के हाथ में लाठी थी और उस पर लिपटा घोंसले का बहुत-सा हिस्सा था।

नन्ही-नन्ही दो गौरैयाँ! वे अभी भी झाँके जा रही थीं और चीं-चीं करके मानो अपना परिचय दे रही थीं, ''हम आ गई हैं! हमारे माँ-बाप कहाँ हैं?''

मैं अवाक् उनकी ओर देखता रहा। फिर मैंने देखा, पिताजी स्टूल पर से नीचे उतर आए हैं। घोंसले के तिनकों में से लाठी निकालकर उन्होंने लाठी को एक ओर रख दिया है और चुपचाप कुर्सी पर आकर बैठ गए हैं। इस बीच माँ कुर्सी पर से उठीं और

सभी दरवाज़े खोल दिए। नन्ही चिड़ियाँ अभी भी हाँफ-हाँफकर चिल्लाए जा रही थीं और अपने माँ-बाप को बुला रही थीं।

उनके माँ-बाप झट-से उड़कर अंदर आ गए, और चीं-चीं करते उनसे जा मिले और उनकी नन्ही-नन्ही चोंचों में चुग्गा डालने लगे। माँ और पिताजी और मैं उनकी ओर देखते रह गए। कमरे में फिर से शोर होने लगा था, पर अबकी बार पिताजी उनकी ओर देख-देखकर केवल मुस्कराते रहे।

❒❒❒❒